ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' में मानवीय संवेदना के विविध आयाम

KEY WORDS:

सुदेश

एम.ए.हिन्दी, नेट, बी.एड, सुपुत्री श्री जगदीश चंद्र नैट/व संदीप नेहरा मकान न0102, ए ब्लाक न्यू अनाज मण्डी सिरसा–125055 हरियाणा

मानव प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट कृति एवं परिवार की महत्वपूर्ण इकाई है। किंतु मानव क्या है? यह प्रश्न आदिकाल से मानव की जिज्ञासा का केंद्र रहा है। वह जानता है कि मानव स्वयं उसके गहन और विस्तृत अध्ययन का एक महत्वपूर्ण विषय है। मानव को मानव द्वारा उसके समग्र रूप में जानना, ज्ञान क्षेत्र का सबसे प्रमुख उपादेय तथा गूढ़ विषय है। मानव ज्ञान परिधि में मानव के विषय में ज्ञानार्जन सर्वाधिक महत्व का विषय है।

परिवार समाज की एक इकाई है। सृष्टि के आरंभ से ही मनुष्य अपने परिवार के साथ जुड़ा हुआ है क्योंकि अकेले मानव की कल्पना करना अपने आप में एक कल्पना है। चाहे मनुष्य संसार में कितना ही भ्रमण क्यों न कर ले लेकिन उसे मानसिक संतुष्टि घर में ही आकर मिलती है। परिवार एकब सार्वभौमिक संस्था होने के कारण इसमें एकरूपता संभव नहीं है। समय परिवर्तन के साथ–साथ इसके रूप में भी परिवर्तन आ गया है। आधुनिक युग में एकल परिवार का चलन बढ़ता जा रहा है तथा परिवार की जरूरतें और इच्छाएं भी बढ़ती जा रही है। पारिवारिक संबंधों में संवेदना का उदाहरण देखिए:– 'नीला बेटी! क्या करने लगी? अम्मा संभल चुकी थी और उन्हें ऐसे समय पानी की आवश्यकता बढ़ गई थी गला तर करने को, जो भावनाओं की आग से खुश्क हो गया था।

नीला ने सकपका कर स्वयं को संभाला, स्वस्थ किया और अम्मा को पानी देकर मुड़ी ही थी कि अनिल ने अम्मा से कहा, 'अम्मा! चिंता क्यों करती हो? आंधी के बाद जब पानी बरसता है, तो कितनी सौंधी गंध उठती है वातावरण में। बहुत झेल चुकीं, जो झेलना था। अच्छा, तो अब मैं चलता हूं।' कहने के साथ ही वह उठ खड़ा हुआ।

अम्मा ने पानी पीकर गिलास नीला को देते हुए कहा, 'तुमने चाय–वाय पिलाई कि नहीं?'

नीला संकुचित हुई तो अनिल ने कहा, 'अम्मा, चाय का क्या है? अब जीवन भर आपकी ही पीनी है।' कहने के साथ ही वह नमस्कार कर दरवाजे की ओर मुड़ गया।

नीला ने तिरस्कार से उसकी पीठ घूरी और दृढ़ स्वर में अम्मा से बोली, 'मैं कल जा रही हूं।'[1]

वर्तमान युग में परिवार की परिभाषा दिन–ब–दिन परिवर्तित होती जा रही है। अब परिवार में प्रेम स्नेह और सौहार्द के स्थान पर आर्थिक तथा सामाजिक परिस्थितियों ने ले लिया है। चाहे कुछ भी हो व्यक्ति को अपने परिवार की छत्र छाया की आवश्यकता होती है। परिवार के बिना उसे सामाजिक प्राणी नहीं समझा जा सकता। दांपत्य संबंध पारिवारिक व्यवस्था व समाज की धुरी है। दांपत्य संबंध में पति–पत्नी के विवाहित जीवन को चित्रित किया जाता है जोकि मधुरता व कटुता का मिश्रण होता है। पति–पत्नी एक दूसरे के जीवन भर के साथी होते हैं, सुख–दुख के साथी। वास्तव में वे एक दूसरे के पूरक हैं एक के बिना दूसरे का जीवन अधूरा है। दांपत्य संबंध मधुरता व कठोरता का ऐसा अनूठा संगम है जिसमें विचलन करने के लिए प्रत्येक प्राणी लालयित रहता है। लेखिका ने भी आलोच्य कहानी संग्रह में संकलित ग्यारह कहानियों में से पांच कहानियों– 'नग आंखें, सौतेली, भाग्यचक्र, अभिनय और भीगा मन' में दांपत्य संबंध से संबंधित विभिन्न परिस्थितियों को उभारने की यथार्थ कोशिश की है।

पत्नी चाहे कितनी भी शिक्षित क्यों न हो, कितने ही ऊंचे पद पर आसीन क्यों न हो, पर वह यह कभी सहन नहीं कर सकती कि उसका पति उसकी उपेक्षा कर किसी अन्य स्त्री से संबंध जोड़े। इसी समस्या को लेखिका ने अपनी 'अभिनय' कहानी में चित्रित किया है। 'अभिनय' कहानी की नायिका अनीता की निम्न पंक्तियों भी पत्नी की ऐसी मनोदशा पर प्रकाश डाल रही है:–

'मुझे क्या पता था कि मेरे अंदर भी कोई चिंगारी है, जो साधारण औरतों की तरह मुझे भी जलाएगी। एक दिन मुझे भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करना पड़ेगा, 'उन्हीं ईर्ष्यालु औरतों की तरह, जिनका वर्णन मैं अपनी कहानियों में करती थी। मुझे क्या पता था कि अपनी उन सब कहानियों की नायिका के रूप मैं ही हूं।'[2]

कहा जाता है कि एक स्त्री राख की सौत को भी सहन नहीं कर सकती। यहां पर अनीता की मनोदशा इसी तथ्य को उजागर कर रही हैं जोकि छत प्रतिछत सत्य प्रतीत हो रहा है।

नारी संपूर्ण दुनिया का आधा भाग है। वह एक ऐसी आधी दुनिया है जो प्रत्येक कदम पर पुरुष द्वारा नियंत्रित और अनुशासित होती रही है। पति भी अपनी पत्नी की मानसिक व्यथा को समझने में अनेक अवसरों पर असफल रहा है। पोखी ही स्थिति का शिकार है 'सौतेली' नामक कहानी की नायिका रानी। यथा:–

'..... तुम क्या समझोगे मन–मन की व्यथा। मेरे द्वारा किए जा सकने वाले संभावित दुर्व्यवहार उन्हें समझा दिए गए है, इसलिए जब कभी सुनील या राम को अकेले देख शरारत से उन्हें पकड़ लेती हूं या पीछे से आंखें बंद करती हूं तो वे शरारत से खिलखिलाने की बजाए भय से चीख उठते हैं। तब मां जी मुझे अकारण, बिना कुछ समझें, गालियां देती उन्हें बचाने आती है तो अपमान से मैं कितनी बार मरती हूं, यह तुम क्या समझोगे और वह आंसुओं से फूट पड़ती।[3]

स्त्री भाव पत्नी से ये हमेशा अपेक्षा की जाती है कि वो अपने पति को समझे, उसके दुख के कारण को जान उसे दूर करने का प्रयत्न करे। ऐसी पत्नी को ही भारतवर्ष में एक आदर्श व सती–सावित्री माना जाता है। पर पति आज के युग में भी अपनी पत्नी के मनोभावों को समझने की कोशिश नहीं करता बल्कि जरूरत नहीं समझता। मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई प्रयोजन के अपनी संतान का लालन–पोषण करते हैं। संतान के खुशी के लिए माता–पिता जीवन भर त्याग करते रहते हैं। संतान की खुशी में ही माता–पिता की खुशी होती है। वे अपनी संतान के चेहरे पर आई दुख की एक लकीर भी बर्दाश नहीं कर सकते। आलोच्य कहानी संग्रह की प्रथम कहानी 'निशांत' में अंधरंग से पीड़ित एक लाचार पिता की अपनी पुत्री की प्रति यही भाव देखने को मिलते है यथा:–

मैं जानता हूं कि तेर हृदय में चिंगारिया है जो समय–समय पर सुलगती रहती है। पर बेटी! तुम समझती हो कि तुम यह सब अकेले सहयोगी। वहीं, इस धुएं में मेरा भी दम घुटता है। तुम्हारी चिंगारियों को बुझाने का कोई उपाय नजर नहीं आता, सोचता बहुत हूं।'[4]

भगवान हट जगह प्रत्यक्ष रूप में नहीं रह सकता, इसलिए उसने मां को बनाया। मां वात्सल्य की साक्षात् मूर्ति होती है जोकि अपनी संतान पर दुख की छाया भी नहीं पड़ने देना चाहती। सौभाग्यवान होते हैं वो जिन्हें दीर्घायु तक मां के वात्सल्य भरे हाथों की छत्र–छाया नसीब होती है। मां अपने संतान के खान–पान, उठने–बैठने प्रत्येक के प्रति सचेत होती है। यथा:–

'पर बेटी। घर की चीज घर की होती है। ये सब चीजें असली घी की बनाई हुई है। इन लड्डुओं में बादाम भी डाल दिए है। कोई ढंग की चीज खाएगी नहीं तो ताकत कहां से आएगी?'[5]

यहां पर एक बहन की अपने छोटे भाई के भविष्य को लेकर की गई चिंता को अंकित किया गया है।

लेकिन जब सच्चाई मणि के सामने आती है तो वह अपने आप पर कंट्रोल नहीं कर पाती और भागकर अपने भाई राजन से क्षमा याचना करती हुई कहती है:–

'दोनों कंधों' पर हाथ रखकर सिर कंधे पर टिका दिया और रोते हुए कहा, नहीं भैया ऐसा मत कहो। मैंने आपको गलत समझा। अपराधिन तो मैं हूं। आपके स्नेह के सिवाय हमें किसी के प्यार की जरूरत नहीं है? बिल्कुल नहीं।उपरोक्त उदाहरणों से भाई–बहन की संवेदना स्वतः सिद्ध हो जाती है।

वर्तमान समय में सामाजिक संबंधों का आधार अर्थ बन गया है, पहले जहां आपसी संबंधों का निर्धारण नैतिक मूल्यों और मान्यताओं पर टिका होता था उसका स्थान आज अर्थोपार्जन ने ले लिया है। इसलिए हर पहलू पर अर्थ का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। अर्थ यूं तो पुरातन काल से ही प्रभावी रहा है, परंतु वर्तमान काल में जीवन का आधार अर्थ बनकर ही रह गया है। निर्धनता अभिशाप होती है। इसलिए मां पुत्री की अन्तरचेतना जागृत करती है।

'उसे याद आया..... 'एक दिन जब वह कॉलेज से एक घंटा देर से आई थी, तो मां ने समझाया था..... बेटी! गरीबों की इज्जत कागज की नाव होती है, जो रबसाती पानी पर भी तैर जाती है। पड़ोसी जब दूसरी लड़कियों की बातें नमक–मिर्च लगाकर उड़ाया करते हैं, तो हमें क्या छोड़ देंगे?' उन्हें तो कोई बहाना चाहिए बात शुरू करने का। फिर, तुम तो जानती ही हो कि पड़ोसी पहले ही खार खाए बैठे हैं, क्योंकि उनकी लड़कियां चार–चार बार फेल होती आई, वजीफा भी लेती रही हो।' तब उसने समझी हुई बात को दुबारा समझकर गांठ बांध ली थी, पर वही मां सीमा से कुछ क्यों नहीं कहती?'[7]

सामाजिक परिवर्तन की द्रुत गति समाज को विभिन्न समूहों में बांट देती है और इनमें से प्रत्येक समूह अपने–अपने आदर्शों की कसौटी को परखकर नवीन मूल्यों की स्थापना करता है।

जिस कारण कान्त को स्थान–स्थान पर अपमानित होना पड़ता है यथा–

'उसके गिरते ही बीस–पच्चीस लोग आसपास इक्ट्ठे हो गए..... 'क्या हुआ, क्या हुआ?' लेकिन जब कारण का पता चला, तो सब मुस्कुराहट अपने अपने रास्ते चल दिए। कांत का चेहरा शर्म से लाल हो गया।'[8]

गृहस्थी जीवन की नींव पक्की हो इसके लिए नितांत आवश्यक है कि उसमें सरलता व सहजता विद्यमान हो और गंभीरता का आभाव हो।

'परम ब्रह्म ने सृष्टि निर्माण के लिए एक–दूसरे के पूरक रूपों की रचना की। पुरुष व नारी। इन्हीं पृथक गुण एवं प्रकृति वाले भिन्न रूपों का मिलन मानव सृष्टि का आधार है। पुरुष कठोरता, सक्रियता, शक्ति एवं शौर्य का परिचायक है, नारी कोमलता, मधुरता एवं सुकुमारता का मूर्त रूप। पुरुष में मस्तिष्क पक्ष की प्रधानता है, कर्मण्यता का प्रवाह, शौर्य का संयोग है औश्र नारी में उसकी निर्ममता, कठोरता, रूक्षता को अपनी स्वभावगत स्निग्धता से मृदुल बनाने की क्षमता विद्यमान है। भारतीय संस्कृति में नारी को स्नेह ममता, वात्सल्य, उत्सर्ग और त्याग के भावगत विशेषताओं के कारण माता, पुत्री, पत्नी और भागिनी के रूप में स्वीकार किया है।'[9]

निष्कर्ष:

आज के सभ्य और शिक्षित समाज को अपनी जीवन शैली पर अत्यंत अभिमान है जिस कारण वह अशिक्षत और आधुनिक जीवन शैली से अपरिचित समाज को कुछ समझता ही नहीं और उन्हें अपने मजाक का आधार बनाता है। 'भाग्यचक्र' नामक कहानी में भी कान्त एक गजेटेड ऑफिसर है। पर उसकी पत्नी आधुनिक जीवन शैली से अपरिचि।

सन्दर्भ

1. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 20
2. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 37

3 डॉ. गीता लाल, 'प्रेमचंद नारी चित्रण' पृ. 38
4 चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 9
5 चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 10
6. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 34
7 चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 13
8. चंद्रलेखा शर्मा 'मेरी प्रिय कहानियां' पृ. 56
9 डॉ. उषा पांडेय, 'मध्ययुगीन हिंदी साहित्य में' नारी भावना' पृ. 13